International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 191-193

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 191-193
www.allresearchjournal.com
Received: 22-09-2015
Accepted: 25-10-2015

डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इलेक्ट्रानिक मीडिया विभाग,
कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं
जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर,

राकेश कुमार पाण्डेय
शोधार्थी, जनसंचार विभाग,
कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं
जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर,

ब्वततमेचवदकमदबम
डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इलेक्ट्रानिक मीडिया विभाग,
कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं
जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर

न्यू मीडिया के संदर्भ: सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी, राकेश कुमार पाण्डेय

शोध–सार
वर्तमान युग में न्यू मीडिया का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। और, न्यू मीडिया का सीधा संबंध इंटरनेट आधारित संप्रेषण प्रक्रिया से है। इस परिप्रेक्ष्य में इंटरनेट से हमारा आशय नेटवर्किंग से है। यह कंप्यूटरों के बीच संपर्क स्थापित करने का एक विशाल तंत्र है, जिसमें एक निर्धारित मापदंड के भीतर सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जाता है। आज विश्व के अनगिनत कंप्यूटर इस नेटवर्क से जुड़ चुके हैं। कोई भी व्यक्ति जिसके पास कंप्यूटर है तथा उसमें इंटरनेट की सुविधा है। वह सूचनाओं के सुपर हाइवे का लाभ प्राप्त कर सकता है। विश्व के देशों में जो कुछ भी नया, अच्छा या बुरा घटित होता है, वह इंटरनेट के माध्यम से तत्काल पहुंच जाता है। वास्तव में नए माध्यम के रूप में इंटरनेट एक ऐसी तकनीकी है जिसमें कंप्यूटरों के नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है, जिससे कि लोगों को विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के डॉक्यूमेंट्स, आंकड़ें, तथा भिन्न प्रकार के विज्ञापन एवं संस्थानों के विषय में अपेक्षित सूचनाएं उपलब्ध होती हैं। ये सूचनाएं विश्व के किसी भी कोने से प्राप्त की जा सकती है। वस्तुतः न्यू मीडिया इंटरनेट से लैस एक आधुनिक संचार नेटवर्क है, जो सूचना एवं संचार क्षेत्र की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। यह एक ऐसी प्रौद्योगिकी है, जिसमें करोड़ों कंप्यूटर एक नेटवर्क से जुड़े होते हैं। यह डिजिटल स्रोत और प्रापक को जोड़ने की प्रक्रिया है। इस प्रकार इंटरनेट को प्रमुख रूप से कंप्यूटरों के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जो एक प्रोटोकोल के तहत संचारित होते हैं। नए माध्यम के द्वारा सर्वाधिक विविध स्रोतों से सूचनाओं तक पहुंचा जा सकता है। इस प्रकार इंटरनेट पाठ्य सामग्री अथवा सूचना को विश्व में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का एक नया माध्यम है जो अत्यंत शीघ्र, सस्ता एवं सरलतापूर्वक संचारित हो जाता है। हालांकि, यह स्वयं अंतःप्रक्रिया नहीं करता है, किंतु उपयोगकर्त्ता कंप्यूटर की बदौलत इस पर नियंत्रण रखता है जो उन्हें नेटवर्क पर सूचना भेजने और प्राप्त करने में मदद पहुंचाते हैं।

कुंजी शब्दः सूचना क्रांति, न्यू मीडिया, नव माध्यम, सुपर हाइवे, सूचना व संचार प्रौद्योगिकी, चर, अंतर्वस्तु, मल्टी मीडिया, सूचना प्रकमण, प्रदत्त, डाटा संसाधन, साइबर एज, डिजिटल संप्रेषण.

परिचय
आधुनिक मानव औद्योगिक क्रांति के बाद सूचना क्रांति के युग में प्रवेश कर चुका है। आजकल सूचना क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस सूचना क्रांति ने भविष्य में अनेक चुनौतियों, अवसरों एवं प्रतिस्पर्द्धाओं का सृजन किया है, जिनके साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का अध्ययन करना अनिवार्य हो गया है। इस आलोक में संचार प्रौद्योगिकी को कंप्यूटर के नित नए विकास ने और अधिक प्रभावी बना दिया है तथा विस्तृत आयाम प्रदान किया है। संचार प्रौद्योगिकी जैसा कि इसके नाम से ही ज्ञात होता है कि यह समग्र सूचनाओं को प्रभावित करने वाली क्रिया है। सूचना प्रौद्योगिकी प्रारूपिक रूप में निम्नलिखित कार्य करती है–

- सूचनाओं का संकलन एवं संग्रहण
- सूचनाओं का संप्रेषण
- सूचनाओं का प्रकमण
- सूचनाओं का पुनःउत्पादन

यह आधुनिक जीवन में दुर्लभ वरदान बनकर उभरी है तथा लगभग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हस्तक्षेप करती है। संक्षेप में इसने शिक्षा, वाणिज्य, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, सुरक्षा आदि सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। कहना गलत न होगा कि यह युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी के रूप में उभरा है जिसके दूरगामी परिणाम होंगे। प्रायः किसी चर की कीमत, मात्रा अथवा गुण को आंकड़ों के

रूप में प्रस्तुत करते हैं। ये सभी इकाइयां किसी चर या वस्तु के संदर्भ में केवल मौलिक तथ्यों को व्यक्त करती हैं, जिनका पृथक रूप में कोई अस्तित्व नहीं है। आंकड़ों को प्रायः एकवचन या बहुवचन, दोनों रूपों में प्रस्तुत किया जाता है। दरअसल सूचनाओं की व्युत्पत्ति आंकड़ों से होती है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि आंकड़ा एक प्रकार की मूल सामग्री है जिनसे सूचनाओं का निर्माण होता है। इस प्रक्रम में आंकड़ों को संसाधित करके उनकी विवेचना की जाती है, ताकि उनमें निहित सामान्य अर्थ को समझा जा सके। इसी विवेचित आंकड़ों को सूचना कहते हैं। किंतु इसके विपरीत यह भी सत्य है कि सूचनाएं मूल सामग्री के रूप में कार्य करती हैं और उन्हें भविष्यगत प्रदतों में परिवर्तित एवं स्थायी कर दिया जाता है। वास्तव में सूचनाओं की व्युत्पत्ति किसी संबंधित प्रदतों के आधार पर की जाती है। उदाहरण के लिए हम एक कार्यालय में कार्यरत व्यक्तियों के नाम, आयु, धर्म, व्यवसाय, शिक्षा, लिंग, पद, नियुक्ति की तारीख एवं अवधि आदि प्रदत्तों को संकलित करते हैं तथा उन प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर संपूर्ण कार्यालय की सामान्य रूपरेखा का परिचय प्राप्त करते हैं।

अस्तु, आधुनिक युग को सूचना संप्रेषण तकनीकी क्रांति का युग कहा जाता है। सूचना संप्रेषण तकनीकी ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। इसने मानव जीवन के लिए जीवनोपयोगी सूचनाओं के संप्रेषण में अहं भूमिका का निर्वाह किया है। इस संदर्भ में भारत सरकार ने विगत वर्षों में राष्ट्रीय शिक्षा मिशन सूचना संप्रेषण तकनीकी के अंतर्गत करोड़ों रूपये का आवंटन किया है। निःसंदेह आज के युग में सूचनाएं वाणिज्यिक महत्त्व वस्तु बनकर उभरी हैं और सूचना के बिना मानव जीवन शून्य नजर आता है।

- **उद्देश्य –** नए माध्यम के संदर्भ में सूचना और प्रौद्योगिकी का अध्ययन

अध्ययन एवं विश्लेषणः

दरअसल सूचना का स्वरूप संगठित, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक होता है। सूचनाओं के माध्यम से हम किसी वस्तु या विषय को उत्तम ढंग से समझ लेते हैं। वास्तविक रूप में सूचना के अंतर्गत आंकड़ा रहता है। एक प्रदत्त प्रक्रिया के बाद ही उपयोगी सूचनाओं में परिवर्तित हो सकता है। नए माध्यम के रूप में कंप्यूटर सूचनाओं के संप्रेषण का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। इसने सूचनाओं को तीव्र गति से तथा विश्व के प्रत्येक कोने में संप्रेषित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इस तरह से सूचना संप्रेषण तकनीकी वह तकनीकी है जिसके द्वारा इनके संप्रेषण कार्य अत्यधिक प्रभावी ढंग से संपन्न किया जाता है। सारतः सूचना संप्रेषण तकनीकी के निम्नलिखित कार्य हैं–

- सूचनाओं का संग्रहण
- सूचनाओं का हस्तांतरण
- सूचनाओं का पुनःउत्पादन करना

प्रो. पीटर्स ने कहा है कि सूचना तकनीकी ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति प्रदान करने की एक नवीन तथा उभरती हुई विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक शोध प्रक्रिया है जिसमें समय और स्थान के आयामों का शिक्षण एवं अधिगम में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। इस तकनीकी के माध्यम से दूरस्थ छात्रों को भी उत्तम एवं प्रभावी ढंग से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। सूचना संप्रेषण तकनीकी के शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में निम्नांकित लक्ष्य हैं–

- शिक्षा एवं अनुसंधान जनित विषय सामग्री का अधिकाधिक संचार करना, हस्तांतरण करना एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना।
- वर्तमान पीढ़ी को प्रभावी साइबर एज में भलीभांति स्थापित करना ताकि शिक्षार्थी अपने कंप्यूटर पर लक्ष्योन्मुखी ऑन लाइन शिक्षा प्राप्त कर सके।
- राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे इसरो, एन.सी.ई.आर.टी. तथा इग्नू आदि के शैक्षणिक कार्यक्रमों को संप्रेषित करना।
- पारंपरिक पुस्तकालयों के स्थान पर डिजिटल पुस्तकालयों की स्थापना करना।
- सूचनाओं का मूल्य पहचान कर उन्हें जन संसाधन के लिए उपयोगी बनाना।
- राष्ट्र के आर्थिक विकास में सहायता देना, यथा–ई–कॉमर्स, ई–मेल, ई–इंक, ए.टी.एम. तथा क्रेडिट कार्ड आदि को अधिकाधिक प्रचलित करके आर्थिक नींव मजबूत करना।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधनों में उन्नति एवं विकास करना जैसे स्केनिंग, सी टी स्केनिंग, पेसमेकर, अल्ट्रा साउंड आदि उपकरणों का निर्माण एवं प्रयोग करना।
- विवेचनार्थ, न्यू मीडिया के संदर्भानुसार सूचना संप्रेषण तकनीकी की प्रमुख आवश्यकताओं एवं उसके महत्त्व संबंधी बिंदुओं को निम्नलिखित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, यथा–
- दिनोंदिन शिक्षा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए तथा शिक्षार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूचना संप्रेषण तकनीकी का अत्यधिक महत्त्व है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी शोधार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप पाठ्य सामग्री को बोधगम्य बनाने का एक अच्छा उपकरण है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी का व्यापक अनुप्रयोग शिक्षण अधिगम प्रकिया को सरल, सुबोध एवं सुगम बनाने में किया जाता है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी शिक्षा व शोध के सभी माध्यमों में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करती है। उदाहरण के तौर पर औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक, सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान करने में सूचना संप्रेषण तकनीकी का केंद्रीय महत्त्व है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी ने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र को सर्वाधिक सशक्त किया है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी का बहुधा प्रयोग सभी प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षणों में एक लोकप्रिय साधन के रूप में किया जा रहा है जो इसके महत्त्व का परिचायक है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी शोध, शिक्षण व अधिगम विधा को अत्यंत रोचक बनाती है तथा लाभार्थियों को अभिप्रेरित करती है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी के द्वारा शिक्षार्थियों के अधिगम को चिरस्थायी बनाया जा सकता है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी का महत्व जनसाधारण को सामान्य शिक्षा प्रदान करने में अत्यधिक है।
- सूचना संप्रेषण तकनीकी लाभार्थियों के ध्यान के केंद्रीयकरण में अत्यधिक उपयोगी है।

इस अनुक्रम में सूचना संप्रेषण तकनीकी के सक्षम उपयोग के लिए मल्टी मीडिया किट्स तैयार किया जाता है। इस किट को निम्नलिखित पदों में प्रयुक्त करते हैं–

पद–1 पाठ्य पुस्तक एवं उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना
पद–2 उपयुक्त एवं प्रभावी संप्रेषण तकनीकी का चयन करना
पद–3 उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग करने के लिए निर्देशों का अनुपालन करना
पद–4 उपयुक्त तकनीकियों को सुव्यवस्थित करना

पद–5 मूल्यांकन की व्यवस्था करना
पद–6 मूल्यांकन करना
विश्लेषणात्मक संदर्भ में सूचना संप्रेषण तकनीकी की भूमिका निम्नलिखित क्षेत्रों में इसके अपेक्षित योगदान द्वारा प्रकट होती है–

- आमने–सामने परामर्श प्रदान करने में
- टेलीफोन द्वारा परामर्श प्रदान करने में
- पत्रों के द्वारा परामर्श प्रदान करने में
- पाठ्य पुस्तकों व अन्य पुस्तकों के द्वारा परामर्श प्रदान करने में
- श्रव्य–दृश्य माध्यम के द्वारा परामर्श प्रदान करने में
- ब्रॉडकास्टिंग द्वारा परामर्श प्रदान करने में
- डिजिटल पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने में
- कंप्यूटरों द्वारा शिक्षण परामर्श प्रदान करने में
- मनोरंजन में
- शैक्षणिक पर्यटन में
- पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम में
- मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रदान करने में
- दूरस्थ कैंपस शिक्षण में
- मुक्त अधिगम में
- मल्टी मीडिया शिक्षण प्रणाली में
- समग्रतः सूचना संप्रेषण तकनीकी की उपादेयता बहुआयामी एवं बहु उपयोगी है। न्यू मीडिया के संदर्भ में यह कतिपय महत्त्वपूर्ण पक्षों को अपने अंदर समाहित करता है, यथा–
- शोध व शिक्षण में सूचना–संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग
- संसाधनों की सहभागिता में सूचना–संप्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग
- शिक्षा की पहुंच एवं सूचना–संप्रेषण तकनीकी की भूमिका
- आभासी विश्वविद्यालयों की स्थापना में सूचना–संप्रेषण तकनीकी की भूमिका
- मानव संसाधन के विकास में सूचना–संप्रेषण तकनीकी की उपादेयता
- दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रमों की उन्नति में सूचना संप्रेषण तकनीकी की भूमिका
- समग्र गुणात्मक विकास में सूचना–संप्रेषण तकनीकी की भूमिका
- शिक्षा जगत में आमूल–चूल क्रांतिकारी कदम की संभावनाओं को यथार्थ रूप में बदलने में सूचना संप्रेषण तकनीकी की भूमिका

निष्कर्ष –

समवेततः न्यू मीडिया का संदर्भ बहुआयामी है। शिक्षा की बढ़ती मांग व उसकी जरूरतों के मद्देनजर शिक्षार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूचना संप्रेषण तकनीकी का अत्यधिक महत्त्व है। यहां मीडिया कार्मिकों व शोधार्थियों के लिए यह चयन करने की सुविधा है कि वे अपने रूचि व प्रवृत्ति के अनुरूप विषय का चुनाव कर सकें। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि इसके अनुसंधानात्मक स्वरूप व प्रकृति के कारण अपने प्रयासों को लक्ष्योन्मुखी एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

सहायक संदर्भ सूची

1. Aiyer, Balakrishna; Digital Television Journalism, 2005, Authors Press, New Delhi.
2. Bhatia, Arun; Impact of Internet on Journalism, 2005, Akanksha Publication House, New Delhi.
3. Bhatt, S.C.; Satellite Invasion of India, 2008, Gyan Publishing House, New Delhi.
4. Brighton, Poul & Dennis, Foy; News Values, 2007, Sage Publication India Pvt. Ltd., New Delhi.
5. Chadha, Savita; Modern Journalism and news writing, 1998, Taxshila prakashan, New Delhi.
6. आलोक, टी.डी.एस.: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 2009, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली.
7. आर्य, पी.के.,: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 2006, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली.
8. ओझा, डी.डी. एवं सत्यप्रकाश : दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, 2007, ज्ञान गंगा, दिल्ली.
9. कुमार, सुरेश : इंटरनेट पत्रकारिता, 2004, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली.
10. दयाल, डॉ. मनोज : मीडिया शोध, 2010, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.
11. देव, हर्ष : उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
12. पचौरी, सुधीश : साइबर स्पेश और मीडिया, 2003, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली.
13. बंसल, राम : कंप्यूटर सूचना प्रणाली विकास, 2009, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
14. भानावत, संजीव : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 2005, जनसंचार केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.
15. शुक्ल, रवीन्द्र : सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र, 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.